

Reg. No. : N-1316/2014-15

ISSN 2394-2207

November 2018, April 2019

Vol. V, No. I

IIJ Impact Factor : 2.011

उन्मेष



Unmesh

An International Half Yearly
Peer Review Refereed Research Journal
(Art & Humanities)

सम्पादकद्वय

डॉ० राधेश्याम मौर्य
शिवेन्द्र कुमार मौर्य

प्रकाशक

जन सेवा एवं शोध शिक्षा संस्थान, प्रतापगढ़, उ०प्र०

अनुक्रमणिका

■ द्विवेदी युगीन कविता और युगीन कवियों का संघर्ष डॉ० अभिलाष कुमार गोंड़	1-5
■ वाराणसी के घाटियों का एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण डॉ० दिनेश सिंह कुशवाहा	6-10
■ प्रेमचंद के कथा साहित्य में समाज के विभिन्न वर्ग और जनजागरण का स्वर श्वेता सिंह	11-15
■ हिंदी दलित आलोचना और स्त्री अरुण कुमार प्रियम	16-20
■ भोजपुरी भाषा में नकारात्मक वाक्य (Negative Sentence in Bhojpuri Language) अमित कुमार गुप्ता	21-25
■ इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में कृषक जीवन अभिषेक दांगी	26-29
■ महाकवि कालिदास की रचनाओं में भौगोलिक ज्ञान डॉ० अखिलेश कुमार	30-34
■ अस्तित्ववादी चिंतन और नयी कहानी की चेतना डॉ० आलोक कुमार	35-40
■ दलित चेतना और डॉ० भीमराव आम्बेडकर नंदी पटोदिया एवं प्रो० दिवाकर शर्मा	41-44
■ विंध्यक्षेत्र की नवपाषाणिक मृद्भाण्ड परम्परा : एक पुनर्विवेचन डॉ० रमाकान्त	45-51
■ ग्रामीण जीवन से साक्षात्कार कराता औघड़ संध्या राय	52-56
■ कुषाण मुद्राओं के आधार पर धार्मिक इतिहास डॉ० सुधीर कुमार गौतम	57-62
■ प्रवासी कहानियों में सांस्कृतिक द्वंद्व और नॉस्टेलजिया अलका	63-69
■ व्यवसाय-प्रबन्धन संबंधी मूल्यपरक समस्याओं के समाधान में सिद्धान्त आधारित विधि की समीक्षा अभय कुमार यादव	70-76
■ प्राणायाम की अवधारणा : 'गणपतिसम्भव' महाकाव्य के आलोक में अनिता चौरसिया	77-80

दलित चेतना और डॉ० भीमराव आम्बेडकर

नंदी पटोदिया* एवं प्रो० दिवाकर शर्मा**

दलित चेतना अर्थात् दलित जागरण से सम्बन्ध रखता है। भारतीय समाज में एक वर्ग ऐसा भी है, जो निचले स्तर पर जीवन-यापन करता है, जो सदियों से अपमानित, प्रताड़ित और भेदभाव का शिकार होता चला आ रहा है। दलित अंग्रेजी शब्द 'डिस्प्रेस्ड क्लास' का हिन्दी अनुवाद है। दलित वर्गों को वर्तमान में अनुसूचित जातियाँ कहा जाता है। दलित का अर्थ पीड़ित, शोषित, दबाया हुआ, टुकड़ा, खंडित, कुचलना, दला हुआ, पिसा हुआ, मसला हुआ, रौंदा हुआ आदि परन्तु अब अनुसूचित जाति को दलित कहा जाता है। अब दलित शब्द पूर्ण रूप से एक जाति विशेष के लिए प्रयोग किया जाता है। हजारों वर्षों तक अस्पृश्य या अछूत समझी जाने वाली उन सभी शोषित जातियों के लिए प्रयुक्त होता है, जो हिन्दू धर्म शास्त्रों द्वारा हिन्दू समाज व्यवस्था में सबसे निचले (चौथे) पायदान पर स्थित है। संवैधानिक भाषा में अनुसूचित जाति कहा गया है।

भारत में दलित आंदोलन की प्रारंभ महात्मा ज्योतिबाराव फुले के नेतृत्व में हुआ। ज्योतिबाराव फुले को पहले शक्स थे, जिन्होंने दलितों के अधिकारों के साथ-साथ दलितों की शिक्षा और चेतना लाने का प्रयास किया। जिस पर आगे चलकर दलित समाज और अन्य समाज के लोगों ने दलितों के अधिकारों की लड़ाई लड़ी। भीमराव आम्बेडकर ने दलित आन्दोलन को समाज की मुख्यधारा से जोड़ने का काम किया और दलितों में अधिकारों के प्रति चेतना पैदा की। डॉ. भीमराव आम्बेडकर ने दलितों की पीड़ा ब्रिटिश सरकार के समक्ष रखी।

डॉ. आम्बेडकर ने सर जॉन साइमन से अपनी भेंट वार्ता में दलितों के जीवन की यथार्थ को प्रस्तुत किया और बताया कि "ब्रिटिश सरकार से पददलित अछूत जातियाँ संतुष्ट नहीं हैं। सच तो यह है कि हम दोहरी गुलामी में जी रहे हैं। अंग्रेज नौकरशाही सरकार ने अछूतों के हित में कुछ भी नहीं किया है। जहाँ तक वे समझते हैं, ब्रिटिश सरकार ने सामंतों से ज्यादा उन पर जुल्म ढाए हैं, अगर यहाँ के पाखंडी, धर्मांध लोगों द्वारा अमानवीय व्यवहार किया गया तो ब्रिटिश सरकार ने उसे नजरअंदाज किया, दूसरे अर्थों में उल्टे उन्हीं वर्गों का साथ दिया। ब्रिटिश सरकार यहाँ के अछूतों की दशा से क्या बाकिफ नहीं है या जानबूझकर उदासीन बनी रही? सार्वजनिक स्थानों पर जाने, मंदिर प्रवेश, राजपथों पर चलने, पीने योग्य पानी के सार्वजनिक कुओं, तालाबों से पानी लेने के अधिकार के सम्बन्ध में क्या कोई कानून बनाएँ?"¹

ब्रिटिश सरकार के समक्ष डॉ. भीमराव आम्बेडकर दलितों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, क्योंकि वे खुद दलित परिवारों में पैदा हुए थे। दलितों की पीड़ा, दर्द और सवर्णों के अत्याचार से परिचित ही नहीं थे, बल्कि पग-पग पर साथ भी रहे थे। भारतीय समाज भी वास्तविक दलित जीवन को स्थिति और परिस्थिति को उजागर करते हुए आगे कहते हैं " ...और भारत में यहाँ के सामंत उनको बंधुआ मजदूर रखे हुए हैं, जिनकी जिंदगी पशुओं से बदतर है। खाने के लिए दिनभर में चूनी-भूसी की रोटी और मिट्टी के बर्तन, रहने के लिए मवेशी, खाने, तन ढकने के लिए फटा-पुराना उतरा हुआ कपड़ा, करोड़ों नर-नारियाँ अर्धनग्न तथा बच्चे बिना कपड़े के पुआलों में रहते हैं और रात दिन खेत-खलिहानों में कड़ी मेहनत कर रहे हैं।"² इस प्रकार डॉ. आम्बेडकर अंग्रेजों के सामने दलितों की वकालत करते हुए, भारत के करोड़ों दलितों की समस्याएं रख दीं। "8 अगस्त, 1930 को नागपुर में दलित वर्ग कांग्रेस का पहला अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन के अध्यक्ष डॉ. आम्बेडकर थे, अपने अध्यक्षीय भाषण में आम्बेडकर ने घोषणा की कि भारत स्वतंत्रता के निकट पहुंच गया है और वह संयुक्त स्वशासित राज्य बने रह सकता है। लेकिन

*समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

**समाजशास्त्र एवं समाज कार्य विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)